Green as Glass - काँच और पर्यावरण

As part of the celebrations for the International Year of Glass (IYOG2022), The All India Glass Manufacturers' Federation (AIGMF) organised its annual contest for Youth: 1st Poem / Essay Writing Contest on 'Green as Glass' or 'काँच और पर्यावरण' coinciding with the International Youth Day.

Online entries were invited from the age group between 7-24 wherein over 2,000 entries were received from educational institutes and youth across India showcasing the vital role of Glass, being the only 100% recyclable packaging and building material.

A digitized version of this Calendar may be viewed at: www.aigmf.com

1st Poem / Essay Writing Contest - Green as Glass or काँच और पर्यावरण (2022)
1st Prize: Akshita Tejwani (14 years)
10th class student of Maharani Gayatri Devi Girls School, Jaipur

Neither as **Magnificent** as **glass**,
Nor as **Green** as **grass**.
As **vivid** as **light bars**,
As **glittering** as **night stars**.
Able to **Reflect own self**,
As **magical** as an **elf**.
Restricting houses from **heat gain**,
Protecting us even in **heavy rain**.

From **Shielding** the plants in a **Green house**,
To decorating an **Embroidered blouse**.
Thanks to the **rear mirror**,
For excluding our roads from **wear and tear**.
Thanks to the **memories lens captured**,
Revisiting them is what **an eye desired**.

'Sparsh Tejwani'

1st Poem / Essay Writing Contest - Green as Glass or काँच और पर्यावरण (2022)
3rd Runner-up: Sparsh Tejwani (20 years)
4th Year student of Msc. Economics Honours + B.E. Electrical and Electronics, BITS Pilani, Rajasthan

When it comes to glass, it is one of the most gifted materials that man has ever received.

Even though most of them believe that glass is a man-made material, it can be naturally occurring, as well. For instance, the striking of lightning on the sands of desert and beach and the volcanic activities result in a material which is similar to a man-made glass.

The usage of glass in the form of beads, bowls, vases and bottles dates back to around 2500-3500 BC. This shows that glass is a material which is consistently used since our ancient times.

Glass, as a transparent and solid material, has a widespread role to play in our daily lives.

Right from helping us to see the world through the help of eyeglasses to being a prime component in architecture it is indeed a one which is impossible to live in its absence. In scientific laboratories, glasses acquire a foremost role in the manufacture of experimental apparatus due to its salient features of withstanding extreme temperatures, being non-reactive as well as transparent in order to observe the reaction taking place.

Glass also acts as a décor piece, as a tableware which helps in setting up a beautiful and vibrant indoor as well as an outdoor space. Another use is that the glass being inert, less reactive to water and sustainable helps in packaging and storing foods and beverages.

In this new world filled with technology, glass updates itself and has an important role in fiber optics, which is a primary component for long-distance and high-performance data networking.

Glass is also beneficial in regulating temperatures. For instance, plants are grown in glass houses because of its ability to trap heat or solar energy and create a warm surrounding than the one which is outside the house.

We have seen how glass is used in our daily life, and its importance in the world of science and technology. Glass is advantageous only because of its salient features such as transparency, sustainability, being fully inert, protection to viruses, and its benefit in communication.

But a question arises as to what will happen to the glass that is used. Everyday numerous used glass bottles tend to fall in trash. It cannot be thrown away just like that, as it can take thousands of years to decompose and can harm the environment. Here comes the main point- **Among the most significant feature of glass is its ability to be recycled**. As we recycle more and more, the amount of garbage that ends up in landfills gets reduced. This in turn aids in keeping the environment pollution-free. Not all materials can be recycled due to which recyclable materials are hard to find. **This proves that glass is eco-friendly and a green material. Henceforth, it can be concluded that it is difficult to find a material as "GREEN AS GLASS".**

'R. Shruthi'

1st Poem / Essay Writing Contest - Green as Glass or काँच और पर्यावरण (2022)
2nd Prize: R. Shruthi (15 years)
10th class student of Jawahar Vidyalaya Senior Secondary School, Chennai

काँच और पर्यावरण, देखा जाए तो इन दोनों में बहुत समानतायें हैं। यदि आप काँच को स्वच्छ एवं सुन्दर रखेंगे तो वह पारदर्शी सिद्ध होता है अन्यथा काँच यदि दूषित रहता है, तो वह भी पारदर्शी ही कहलायेगा परन्तु उसमें से दिखने वाला हर दृश्य धुंधला मालूम होगा। उसके पश्चात उस काँच में से देखने वाला हर दृश्य चाहे फिर वह सत्य हो या फिर असत्य हो वह एक ही समान दिखेगा। कुछ इसी प्रकार है हमारा पर्यावरण, इसे भी यदि हम स्वच्छ रखेंगे तो यह भी हमें रोगों से मुक्त रखेगा अर्थात पर्यावरण यदि दूषित हुआ, तो अनेक रोग हमारे वायुमंडल में विचरण करेंगे, जिसके पश्चात समस्त जीव-जंतु भिन्न-भिन्न प्रकार के रोगों से पीड़ित हो जाएंगे। कहने का तात्पर्य यह है कि काँच और पर्यावरण, दोनों के लिए स्वच्छता का बहुत महत्व है।

दुनिया का हर शौक पाला नहीं जाता, काँच के खिलौनों को उछाला नहीं जाता। पर्यावरण स्वच्छ रखने से हर रोग होता है दूर, क्योंकि हर कार्य भगवान पर टाला नहीं जाता।

काँच और पर्यावरण के संदर्भ में एक और समानता दिखाई पड़ती है। प्राकृतिक काँच का निर्माण यानी ज्वालामुखीय काँच का निर्माण उसके पिघले हुए रूप के तेज़ी से ठंडा होते ही बनता है। ऐसे ही मेघ में अत्याधिक जल एकत्रित होने के पश्चात जब वह शीतल पड़ने लगता है तो मेघ वर्षा करने लगते है, जिसके कारण वह वर्षा कि बूंदे धरा पर पड़ती हैं और वृक्षों की जड़ों से होते हुए प्रत्येक वृक्ष के प्रत्येक भाग को जल प्रदान करती हैं। जिसके कारण समस्त वृक्ष खिले-खिले रहते है अथवा काँच की ही भाँति वातावरण को शीतल रखते हैं।

काँच एक ऐसी वस्तु है जो शत प्रतिशत **पुनः प्रयोजित** अथवा **पारदर्शी** है। काँच को किसी भी आकार में परिवर्तित कर उसे घरों की सज्जा में भी उपयोग में लाया जा सकता है। काँच आंतरिक सज्जा में बनावट और परिष्कार जोड़ता है। आंतरिक सज्जा के लिए उपयोग किये जाने पर यह विभिन्न आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए जाना जाता है।

काँच की अत्यधिक उपयोगिता ही उसका श्रेष्ठ होना सिद्ध करता है।

काँच को अपना प्रतिबिम्ब देखने के लिए भी उपयोग में लाया जाता है। **काँच के इसी रूप को दर्पण कहते है।** दर्पण का उपयोग अत्यधिक समय सजने संवरने के लिए होता है। दर्पण छवि की दिशा को एक समान लेकिन विपरीत कोण में उलट देता है जिससे प्रकाश उस पर चमकता है।

काँच का प्रयोग वाहनों में भी होता है जिसके कारण कोई भी वाहन चलाते समय उस काँच या दर्पण से अपने पीछे की ओर के दृश्यों के प्रतिबिम्ब को भी देख सकता है। इसी प्रकार वाहन चालक वाहन चलाते समय सावधानी भी बरत सकता है। काँच और पर्यावरण दोनों को ही समान रूप से देखा जा सकता है। काँच हमारे अस्तित्व की छवि प्रस्तुत करता है, वहीं पर्यावरण मानव जाति के अस्तित्व को उजागर करता है।

एक काँच लोगों को बहुत चुभता है लेकिन जब वह काँच आइना बन जाता है तब उसे पूरी दुनिया देखती है।

काँच के समक्ष खड़े होकर हम अपने सुख-दुख या पीड़ा की बातें कर स्वयं के मन को शांत अथवा पीड़ा मुक्त कर सकते हैं। ठीक इसके समान ही पर्यावरण है, यदि पर्यावरण में चारों ओर हरियाली छाई होती है अथवा चारों ओर मौन होता है तो वहाँ पर भी हम स्वयं तनाव की जिन्दगी से मुँह मोड़कर कुछ समय आराम एवम् एकांत में व्यतीत कर सकते हैं।

काँच को कई रंगों में बनाया जा सकता है। काँच एक स्थायी, पूर्ण प्रकार से पुनर्चक्रित करने योग्य सामग्री है जो जलवायु परिवर्तित करने अथवा कीमती प्राकृतिक संसाधनों को बचाने में योगदान देने जैसे महान पर्यावरणीय लाभ प्रदान करती है। काँच और पर्यावरण एक दूसरे के पर्याय है। दोनों को समान रूप से देखा जा सकता है।

जहाँ काँच साफ़ सुथरा रहकर सम्पूर्ण जाति की छवि स्पष्ट करने में सक्षम है वहीं प्रकृति भी साफ़-सुथरा रहकर संपूर्ण जीव-जंतु की छवि को प्रदर्शित करती है। प्राकृतिक सौंदर्य उसके रखरखाव पर निर्भर है। **प्राकृतिक सम्पदा में सर्वोत्तम है काँच।**

अंततः काँच के विषय में यह कहा जा सकता है कि, काँच और पर्यावरण मनुष्य के जीवन में बहुत महत्वपूर्ण हैं एवं **पृथ्वी के यह दो तत्व मानव जाति के जीवन में सर्वोत्तम स्थान पर होने चाहिए।**

'कनिष्क शर्मा'

1st Poem / Essay Writing Contest - Green as Glass or काँच और पर्यावरण (2022)
3rd Prize: Kanishk Sharma (16 years)
11th class student of Ajanta Public School, Gurugram (Haryana)

About the AIGMF:

The All India Glass Manufacturers' Federation (AIGMF) is a not for profit National Apex Body of the Indian Glass Industry, representing all segments and sectors.

AIGMF undertakes socially responsible steps as a voluntary service to society, thereby bringing increased awareness of Glass.

Celebrating 80 Years of AIGMF (1944–2023)

The All India Glass Manufacturers' Federation
812 New Delhi House, 27 Barakhamba Road, New Delhi - 110 001 INDIA
Tel: +91 11 2331 6507 E-Mail: info@aigmf.com

AIGMF Since 1944
www.aigmf.com

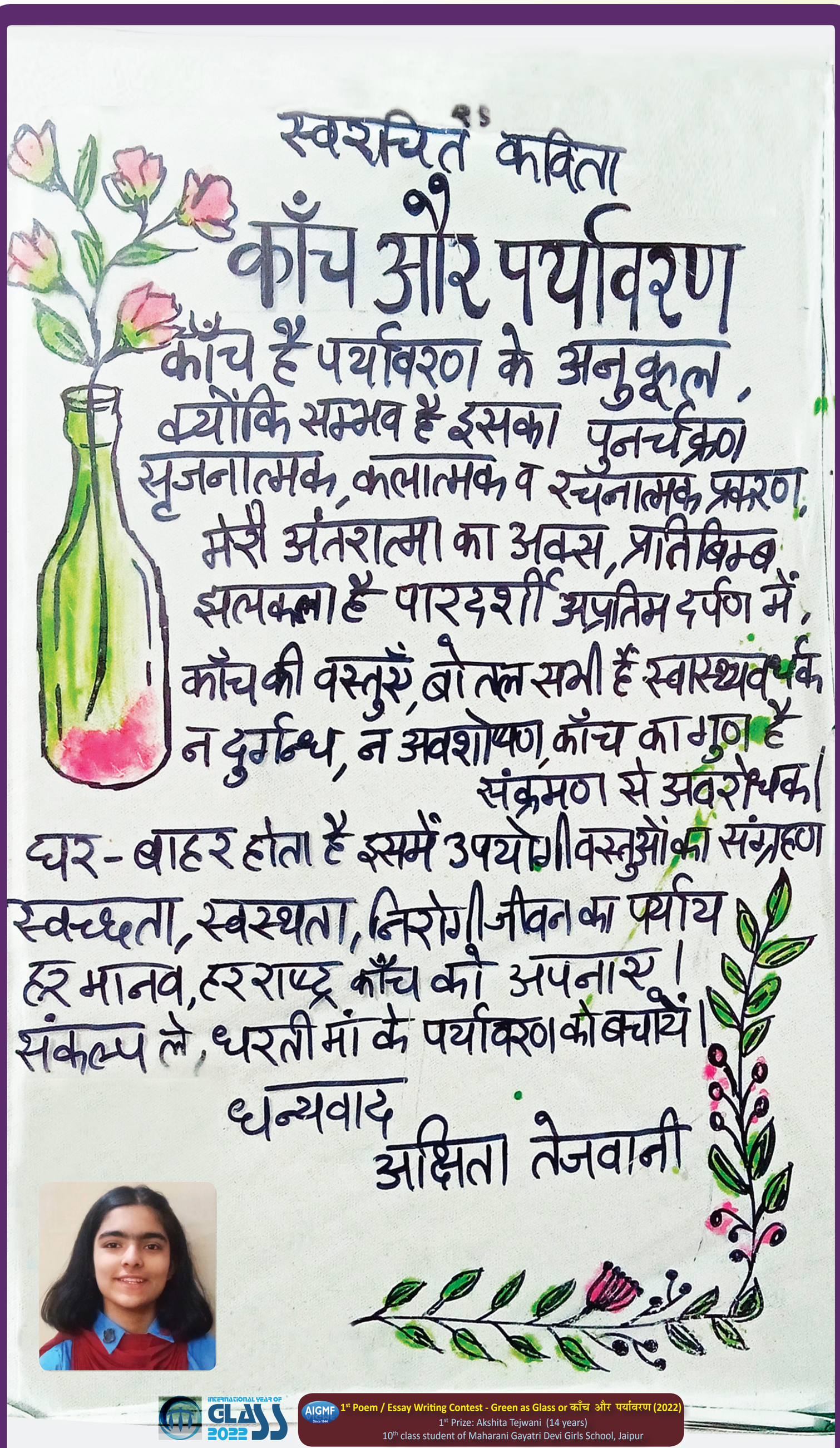

स्वरचित कविता

काँच और पर्यावरण

काँच है पर्यावरण के अनुकूल,
क्योंकि सम्भव है इसका पुनर्चक्रण
सृजनात्मक, कलात्मक व रचनात्मक प्रकरण,
मेरी अंतरात्मा का अक्स, प्रतिबिम्ब
झलकता है पारदर्शी अप्रतिम दर्पण में,
काँच की वस्तुएं, बोतल सभी हैं स्वास्थ्यवर्धक
न दुर्गन्ध, न अवशोषण, काँच का गुण है
संक्रमण से अवरोधक।
घर-बाहर होता है इसमें उपयोगी वस्तुओं का संग्रहण
स्वच्छता, स्वस्थता, निरोगी जीवन का पर्याय
हर मानव, हर राष्ट्र काँच को अपनाए!
संकल्प ले, धरती मां के पर्यावरण को बचायें।

धन्यवाद
अक्षिता तेजवानी

International Year of Glass 2022

AIGMF 1st Poem / Essay Writing Contest - Green as Glass or काँच और पर्यावरण (2022)
1st Prize: Akshita Tejwani (14 years)
10th class student of Maharani Gayatri Devi Girls School, Jaipur

2023

January

Week	S	M	T	W	T	F	S
52 1	1	2	3	4	5	6	7
2	8	9	10	11	12	13	14
3	15	16	17	18	19	20	21
4	22	23	24	25	26	27	28
5	29	30	31				

February

Week	S	M	T	W	T	F	S
5				1	2	3	4
6	5	6	7	8	9	10	11
7	12	13	14	15	16	17	18
8	19	20	21	22	23	24	25
9	26	27	28				

March

Week	S	M	T	W	T	F	S
9				1	2	3	4
10	5	6	7	8	9	10	11
11	12	13	14	15	16	17	18
12	19	20	21	22	23	24	25
13	26	27	28	29	30	31	

Celebrating 80 Years of AIGMF 1944 2023

The All India Glass Manufacturers' Federation
812 New Delhi House, 27 Barakhamba Road, New Delhi - 110 001 INDIA
Tel: +91 11 2331 6507 E-Mail: info@aigmf.com

AIGMF Since 1944
www.aigmf.com

When it comes to glass, it is one of the most gifted materials that man has ever received.

Even though most of them believe that glass is a man-made material, it can be naturally occurring, as well. For instance, the striking of lightning on the sands of desert and beach and the volcanic activities result in a material which is similar to a man-made glass.

The usage of glass in the form of beads, bowls, vases and bottles dates back to around 2500-3500 BC. This shows that glass is a material which is consistently used since our ancient times.

Glass, as a transparent and solid material, has a widespread role to play in our daily lives.

Right from helping us to see the world through the help of eyeglasses to being a prime component in architecture it is indeed a one which is impossible to live in its absence. In scientific laboratories, glasses acquire a foremost role in the manufacture of experimental apparatus due to its salient features of withstanding extreme temperatures, being non-reactive as well as transparent in order to observe the reaction taking place.

Glass also acts as a décor piece, as a tableware which helps in setting up a beautiful and vibrant indoor as well as an outdoor space. Another use is that the glass being inert, less reactive to water and sustainable helps in packaging and storing foods and beverages.

In this new world filled with technology, glass updates itself and has an important role in fiber optics, which is a primary component for long-distance and high-performance data networking.

Glass is also beneficial in regulating temperatures. For instance, plants are grown in glass houses because of its ability to trap heat or solar energy and create a warm surrounding than the one which is outside the house.

We have seen how glass is used in our daily life, and its importance in the world of science and technology. Glass is advantageous only because of its salient features such as transparency, sustainability, being fully inert, protection to viruses, and its benefit in communication.

But a question arises as to what will happen to the glass that is used. Everyday numerous used glass bottles tend to fall in trash. It cannot be thrown away just like that, as it can take thousands of years to decompose and can harm the environment. Here comes the main point- **Among the most significant feature of glass is its ability to be recycled.** As we recycle more and more, the amount of garbage that ends up in landfills gets reduced. This in turn aids in keeping the environment pollution-free. Not all materials can be recycled due to which recyclable materials are hard to find. **This proves that glass is eco-friendly and a green material. Henceforth, it can be concluded that it is difficult to find a material as "GREEN AS GLASS".**

'R. Shruthi'

INTERNATIONAL YEAR OF GLASS 2022

AIGMF Since 1944 1st Poem / Essay Writing Contest - Green as Glass or काँच और पर्यावरण (2022)
2nd Prize: R. Shruthi (15 years)
10th class student of Jawahar Vidyalaya Senior Secondary School, Chennai

2023

April

Week	S	M	T	W	T	F	S
13							1
14	2	3	4	5	6	7	8
15	9	10	11	12	13	14	15
16	16	17	18	19	20	21	22
17	23	24	25	26	27	28	29
18	30						

May

Week	S	M	T	W	T	F	S
18		1	2	3	4	5	6
19	7	8	9	10	11	12	13
20	14	15	16	17	18	19	20
21	21	22	23	24	25	26	27
22	28	29	30	31			

June

Week	S	M	T	W	T	F	S
22					1	2	3
23	4	5	6	7	8	9	10
24	11	12	13	14	15	16	17
25	18	19	20	21	22	23	24
26	25	26	27	28	29	30	

काँच और पर्यावरण, देखा जाए तो इन दोनों में बहुत समानतायें हैं। यदि आप काँच को स्वच्छ एवं सुन्दर रखेंगे तो वह पारदर्शी सिद्ध होता है अन्यथा काँच यदि दूषित रहता है, तो वह भी पारदर्शी ही कहलायेगा परन्तु उसमें से दिखने वाला हर दृश्य धुंधला मालूम होगा। उसके पश्चात उस काँच में से देखने वाला हर दृश्य चाहे फिर वह सत्य हो या फिर असत्य हो वह एक ही समान दिखेगा। कुछ इसी प्रकार है हमारा पर्यावरण, इसे भी यदि हम स्वच्छ रखेंगे तो यह भी हमें रोगों से मुक्त रखेगा अर्थात पर्यावरण यदि दूषित हुआ, तो अनेक रोग हमारे वायुमंडल में विचरण करेंगे, जिसके पश्चात समस्त जीव-जंतु भिन्न-भिन्न प्रकार के रोगों से पीड़ित हो जाएंगे। कहने का तात्पर्य यह है कि काँच और पर्यावरण, दोनों के लिए स्वच्छता का बहुत महत्व है।

दुनिया का हर शौक पाला नहीं जाता, काँच के खिलौनों को उछाला नहीं जाता। पर्यावरण स्वच्छ रखने से हर रोग होता है दूर, क्योंकि हर कार्य भगवान पर टाला नहीं जाता।

काँच और पर्यावरण के संदर्भ में एक और समानता दिखाई पड़ती है। प्राकृतिक काँच का निर्माण यानी ज्वालामुखीय काँच का निर्माण उसके पिघले हुए रूप के तेज़ी से ठंडा होते ही बनता है। ऐसे ही मेघ में अत्याधिक जल एकत्रित होने के पश्चात जब वह शीतल पड़ने लगता है तो मेघ वर्षा करने लगते है, जिसके कारण वह वर्षा कि बूंदे धरा पर पड़ती हैं और वृक्षों की जड़ों से होते हुए प्रत्येक वृक्ष के प्रत्येक भाग को जल प्रदान करती हैं। जिसके कारण समस्त वृक्ष खिले-खिले रहते है अथवा काँच की ही भाँति वातावरण को शीतल रखते हैं।

काँच एक ऐसी वस्तु है जो शत प्रतिशत **पुनः प्रयोजित** अथवा **पारदर्शी** है। काँच को किसी भी आकार में परिवर्तित कर उसे घरों की सज्जा में भी उपयोग में लाया जा सकता है। काँच आंतरिक सज्जा में बनावट और परिष्कार जोड़ता है। आंतरिक सज्जा के लिए उपयोग किये जाने पर यह विभिन्न आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए जाना जाता है।

काँच की अत्यधिक उपयोगिता ही उसका श्रेष्ठ होना सिद्ध करता है।

काँच को अपना प्रतिबिम्ब देखने के लिए भी उपयोग में लाया जाता है। **काँच के इसी रूप को दर्पण कहते है।** दर्पण का उपयोग अत्यधिक समय सजने संवरने के लिए होता है। दर्पण छवि की दिशा को एक समान लेकिन विपरीत कोण में उलट देता है जिससे प्रकाश उस पर चमकता है।

काँच का प्रयोग वाहनों में भी होता है जिसके कारण कोई भी वाहन चलाते समय उस काँच या दर्पण से अपने पीछे की ओर के दृश्यों के प्रतिबिम्ब को भी देख सकता है। इसी प्रकार वाहन चालक वाहन चलाते समय सावधानी भी बरत सकता है। काँच और पर्यावरण दोनों को ही समान रूप से देखा जा सकता है। काँच हमारे अस्तित्व की छवि प्रस्तुत करता है, वहीं पर्यावरण मानव जाति के अस्तित्व को उजागर करता है।

एक काँच लोगों को बहुत चुभता है लेकिन जब वह काँच आइना बन जाता है तब उसे पूरी दुनिया देखती है।

काँच के समक्ष खड़े होकर हम अपने सुख-दुख या पीड़ा की बातें कर स्वयं के मन को शांत अथवा पीड़ा मुक्त कर सकते हैं। ठीक इसके समान ही पर्यावरण है, यदि पर्यावरण में चारों ओर हरियाली छाई होती है अथवा चारों ओर मौन होता है तो वहाँ पर भी हम स्वयं तनाव की जिन्दगी से मुँह मोड़कर कुछ समय आराम एवम् एकांत में व्यतीत कर सकते हैं।

काँच को कई रंगों में बनाया जा सकता है। काँच एक स्थायी, पूर्ण प्रकार से पुनर्चक्रित करने योग्य सामग्री है जो जलवायु परिवर्तित करने अथवा कीमती प्राकृतिक संसाधनों को बचाने में योगदान देने जैसे महान पर्यावरणीय लाभ प्रदान करती है। काँच और पर्यावरण एक दूसरे के पर्याय है। दोनों को समान रूप से देखा जा सकता है।

जहाँ काँच साफ़ सुथरा रहकर सम्पूर्ण जाति की छवि स्पष्ट करने में सक्षम है वहीं प्रकृति भी साफ़-सुथरा रहकर संपूर्ण जीव-जंतु की छवि को प्रदर्शित करती है। प्राकृतिक सौंदर्य उसके रखरखाव पर निर्भर है। **प्राकृतिक सम्पदा में सर्वोत्तम है काँच।**

अंततः काँच के विषय में यह कहा जा सकता है कि, काँच और पर्यावरण मनुष्य के जीवन में बहुत महत्वपूर्ण हैं एवं **पृथ्वी के यह दो तत्व मानव जाति के जीवन में सर्वोत्तम स्थान पर होने चाहिए।**

'कनिष्क शर्मा'

INTERNATIONAL YEAR OF GLASS 2022

AIGMF 1st Poem / Essay Writing Contest - Green as Glass or काँच और पर्यावरण (2022)
3rd Prize: Kanishk Sharma (16 years)
11th class student of Ajanta Public School, Gurugram (Haryana)

2023

July

Week	S	M	T	W	T	F	S
26							1
27	2	3	4	5	6	7	8
28	9	10	11	12	13	14	15
29	16	17	18	19	20	21	22
30	23	24	25	26	27	28	29
31	30	31					

August

Week	S	M	T	W	T	F	S
31			1	2	3	4	5
32	6	7	8	9	10	11	12
33	13	14	15	16	17	18	19
34	20	21	22	23	24	25	26
35	27	28	29	30	31		

September

Week	S	M	T	W	T	F	S
35						1	2
36	3	4	5	6	7	8	9
37	10	11	12	13	14	15	16
38	17	18	19	20	21	22	23
39	24	25	26	27	28	29	30

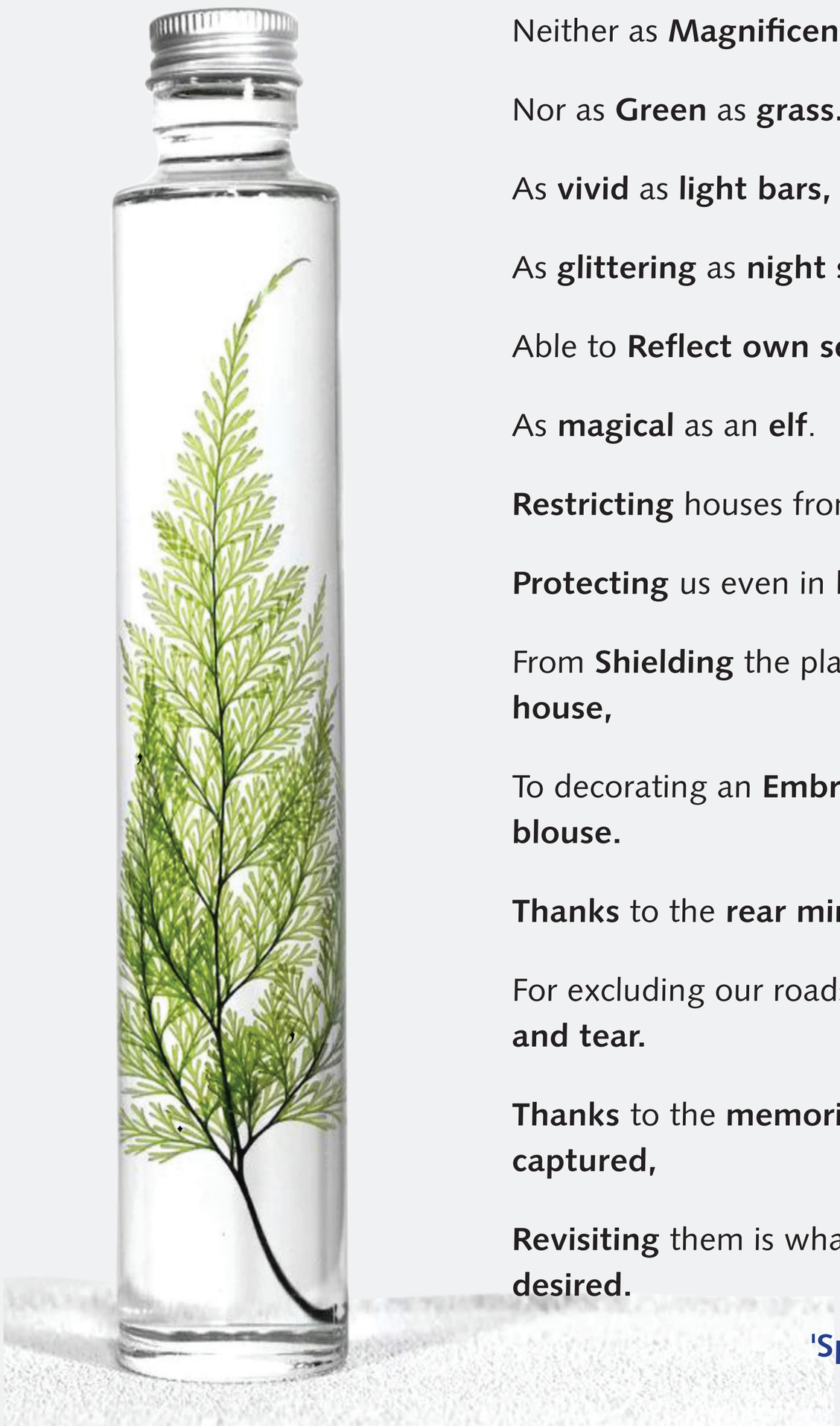

Neither as **Magnificent** as **glass,**

Nor as **Green** as **grass.**

As **vivid** as **light bars,**

As **glittering** as **night stars.**

Able to **Reflect own self,**

As **magical** as an **elf**.

Restricting houses from **heat gain,**

Protecting us even in **heavy rain.**

From **Shielding** the plants in a **Green house,**

To decorating an **Embroidered blouse.**

Thanks to the **rear mirror,**

For excluding our roads from **wear and tear.**

Thanks to the **memories lens captured,**

Revisiting them is what **an eye desired.**

'Sparsh Tejwani'

International Year of GLASS 2022

AIGMF Since 1944 1st Poem / Essay Writing Contest - Green as Glass or काँच और पर्यावरण (2022)
3rd Runner-up: Sparsh Tejwani (20 years)
4th Year student of Msc. Economics Honours + B.E. Electrical and Electronics, BITS Pilani, Rajasthan

2023

October

Week	S	M	T	W	T	F	S
40	1	2	3	4	5	6	7
41	8	9	10	11	12	13	14
42	15	16	17	18	19	20	21
43	22	23	24	25	26	27	28
44	29	30	31				

November

Week	S	M	T	W	T	F	S
44				1	2	3	4
45	5	6	7	8	9	10	11
46	12	13	14	15	16	17	18
47	19	20	21	22	23	24	25
48	26	27	28	29	30		

December

Week	S	M	T	W	T	F	S
48						1	2
49	3	4	5	6	7	8	9
50	10	11	12	13	14	15	16
51	17	18	19	20	21	22	23
52	24	25	26	27	28	29	30
53	31						